भारतीय सुगम गायन शैलियों के साथ प्रयुक्त पाश्चात्य वाद्यों का प्रयोग : एक अध्ययन

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग़,
आगरा से संगीत में पी–एच.डी. की उपाधि की
पूर्ति हेतु शोध प्रबन्ध की
रूपरेखा

2018

निर्देशिका :
डॉ0 (श्रीमती) रश्मि श्रीवास्तव
एसो0 प्रो0 संगीत विभाग
कलासंकाय

शोधकर्त्री :
अंजलि चौहान

सह निर्देशिका एवं विभागाध्यक्ष :
प्रो0 (श्रीमती) सुभद्रा कुमारी सतसंगी
संगीत विभाग, कला संकाय

संकाय प्रमुख
प्रो0 जे0 के0 वर्मा
अंग्रेजी विभाग, कला संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड विश्वविद्याल) दयालबाग़, आगरा–282005

भूमिका –

संगीत कला एक ऐसी त्रिवेणी है, जिसमें गीत, वाद्य और नृत्य तीनों का मधुर संगम है। इन तीनों का परस्पर अभिन्न सम्बन्ध रहा है। न ही गीत को वाद्य से अलग किया जा सकता है और न ही नृत्य को गीत और वाद्य से।

संगीत की तीनों विधाएँ गायन, वादन एवं नृत्य अपने में समृद्ध एवं गौरवशाली इतिहास को समेटे हुई हैं, जिनकी अपनी–अपनी मौलिक विशेषताएँ एवं साहित्यिक सौन्दर्य है। इन तीनों विधाओं में यदि, वाद्य विद्या पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि वाद्यों के चार प्रमुख वर्ग हैं तत्, घन, सुषिर व अवनद्ध इन चारों ही प्रकार के वाद्यों की परम्परा प्राचीन काल से ही श्रृंखलाबद्ध रूप से चली आ रही है।

आचार्य भरत मत के अनुसार वाद्य चार वर्गों में विभाजित है जो इस प्रकार है–

(i) तत्

(ii)घन

(iii)सुषिर

(iv)अवनद्ध

उपर्युक्त चारों ही वर्ग के वाद्यों का प्रयोग प्राचीनकाल से ही भारतीय संगीत में परम्परागत रूप से किया जाता रहा है। प्रत्येक काल की आवश्यकता, जनरूचि में परिवर्तन और प्रयोग के आधार पर इन चारों ही वर्ग के वाद्यों में किंचित फेरबदल समय के अनुसार होते रहें हैं। विभिन्न सभ्यताओं के प्रभाव के फलस्वरूप भी भारतीय संगीत में, वाद्यों के प्रयोग की दृष्टि से, परिवर्तन दिखाई देते हैं। प्रारंभ में केवल भारतीय वाद्यों का प्रयोग दिखाई देता है। तत्पश्चात् वाद्य प्रयोग में यवन संस्कृति के मेल से परिवर्तन आये एवं कालान्तर में वर्तमान समय तक आते–आते पाश्चात्य संगीत के वाद्यों का प्रभाव भी परिलक्षित होने लगा। सम्भवतः

भारतीय संस्कृति व कलाओं पर पड़ने वाले प्रभाव के कारण भारतीय संगीत में उनका प्रयोग होने लगा।

पृष्ठभूमि –

पाश्चात्य संगीत व उसमें प्रयोग किये जाने वाले वाद्यों का प्रयोग आधुनिक भारत में दिखाई देता है जैसे– बोंगों–कोंगों, ट्राएंगल, ड्रमसेट, सिम्बल आदि। कुछ पाश्चात्य वाद्य ऐसे भी हैं जिनका प्रयोग भारतीय संगीत में पूर्णतः भारतीय कला के रूप में देखने को मिलता है जैसे वॉयलिन, हारमोनियम व हवाईन गिटार आदि। ये वाद्य पाश्चात्य वाद्य है लेकिन आज जो हारमोनियम भारतीय संगीत में बजाया जा रहा है, उसमें पूरी–पूरी भारतीय रागदारी दिखाई देती है। हारमोनियम वर्तमान समय में भारतीय संगीत के एक अनिवार्य वाद्य के रूप में मान्य है।

इस तरह से बहुत से वाद्य है जो पाश्चात्य वाद्य है लेकिन वर्तमान समय में भारतीय संगीत में पूरी तरह से रच बस गये हैं और अपने महत्व के कारण अग्रणी वाद्यों के रूप में प्रयुक्त हो रहें हैं। पाश्चात्य वाद्यों का भारतीय संगीत में प्रयोग की दृष्टि से अवलोकन करें तो यह भारतीय संगीत की अनेक विधाओं के साथ चाहे वह शास्त्रीय गायन, वादन व नृत्य हो अथवा सुगम संगीत की विविध विधाएँ, सभी में किसी न किसी रूप से पाश्चात्य वाद्य का प्रयोग किये जा रहे हैं, किन्तु वर्तमान भारतीय सुगम संगीत की प्रचलित गायन शैलियों में आधुनिक बदलाव की बयार प्रचुरता से देखी जा सकती है। सुगम संगीत की गायन शैलियों के साथ पाश्चात्य वाद्यों के प्रयोग से जहाँ एक ओर नवीनता दृष्टव्य है वही सौन्दर्य वृद्धि भी देखी जा सकती है। अतः सुगम संगीत की गायन–शैलियों के प्रदर्शन का रंग अनूठा ही कहा जा सकता है।

विषय का प्रार्दुभाव –

वाद्य विद्या में हो रहे उपर्युक्त परिवर्तनों पर दृष्टिपात करने के फलस्वरूप यह उत्सुकता होनी स्वाभाविक है कि वे कौन–कौन से पाश्चात्य वाद्य है जिनका प्रयोग भारतीय सुगम संगीत की गायन शैलियों में प्रचुरता से किया जा रहा है। उनके प्रभाव के फलस्वरूप भारतीय परम्परागत वाद्यों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है, या इन पाश्चात्य वाद्यों के प्रयोग के फलस्वरूप भारतीय संगीत के क्षेत्र में क्या सकारात्मक व नकारात्मक परिवर्तन हो रहे हैं ? इन बिन्दुओं की जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से शोधकर्त्री ने पाठ्य पुस्तकों, पत्र पत्रिकाओं के साथ ही इस दिशा में हो रहें विभिन्न शोध कार्यों पर ध्यान केन्द्रित किया। तत्सम्बन्धी जो भी जानकारी प्राप्त हुई उनका विवरण निम्नवत् है–

शोध प्रबन्ध –

1 उत्तर भारतीय संगीत में बेला (वॉयलिन) वादन का ग्रहण और विकास का साहित्य। रमेश तांग्रे (देवी अहल्या विश्वविद्यालय), 1993

2 भारतीय संगीत में वृन्द–वादन, रवीन्द्र रॉय (राजस्थान विश्वविद्यालय), 1978

3 भारतीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में पाश्चात्य संगीत वाद्यों के योगदान का समीक्षात्मक अध्ययन। रवि गौतम (कुरूश्रेत्र विश्वविद्यालय), 2006

4 भारतीय संगीत पर पाश्चात्य संगीत के पड़ने वाले प्रभाव के सन्दर्भ में अध्ययन। मनीशा संघ (ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय), 2005

पुस्तकें–

1 ताल वाद्य शास्त्र – पं0 मनोहर भालचन्द्र राव मराठे।

2 संगीत यू.जी.सी. नेट – डॉ0 शिखा स्नेही, आकांक्षा सारस्वत।

3 ताल कोश – गिरिश चन्द्र श्रीवास्तव।

पत्र–पत्रिकायें–

1 संगीत मासिक पत्रिका, मई 1996–लक्ष्मी नारायण गर्ग।

2 संगीत मासिक पत्रिका, जून 1984–लक्ष्मी नारायण गर्ग।

उपर्युक्त वर्णित पाठ्य सामग्रियों को दृष्टिगत करते हुए व शोधकर्त्री के संज्ञान में आये शोधकार्यों को देखते हुये यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि पाश्चात्य संगीत के तत्, घन, सुषिर व अवनद्ध वाद्यों की संक्षिप्त जानकारी के साथ–साथ कुछ हद तक भारतीय संगीत में इन वाद्यों की उपयोगिता के सम्बन्ध में भी जानकारी प्राप्त होती है, तथापि भारतीय सुगम संगीत की गायन विधाओं में भारतीय परम्परागत वाद्यों के साथ ही कौन–कौन से पाश्चात्य वाद्यों का प्रयोग किया जा रहा है? उनके प्रयोग से भारतीय सुगम संगीत की धारा में क्या परिवर्तन हो रहे हैं? व पाश्चात्य वाद्यों के प्रयोग के फलस्वरूप परम्परागत वाद्यों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। आदि बिन्दुओं से सम्बन्धित पूर्ण रूप से जानकारी नहीं उपलब्ध हो पाई है व इस दिशा में अब तक कोई शोधकार्य नहीं किया गया है। यह विषय सर्वथा अछूता है अतः शोधकर्त्री ने इस विषय का चयन अपने शोधकार्य हेतु किया है।

विषय कथन –

भारतीय सुगम गायन शैलियों के साथ प्रयुक्त पाश्चात्य वाद्यों का प्रयोग – एक अध्ययन।

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या –

1 **सुगम संगीत**– सुगम संगीत भारतीय संगीत विद्या का एक अंग है। वह संगीत जिसे सहजता से सीखा और गाया बजाया जा सके, जिसे निश्चित नियमों में बाँधा नहीं गया है, जो लोक में प्रिय है, सुगम संगीत कहलाता है इसके अन्तर्गत भजन, ग़ज़ल आदि गायन–शैलियाँ निहित हैं।

2 **पाश्चात्य वाद्य**– पाश्चात्य (वि) 1. पश्चिमी देशों का

2. पश्चिम दिशा का

वाद्य – बाजा

पश्चिमी देशों में बजाये जाने वाले संगीत के साथ प्रयुक्त किये जाने वाले वाद्यों को पाश्चात्य वाद्य कहते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. वर्तमान समय में प्रचलित भारतीय सुगम संगीत की गेय विधाओं का अध्ययन करना।

2. भारतीय सुगम संगीत में प्रयुक्त वर्तमान भारतीय वाद्यों का संक्षिप्त अध्ययन करना।

3. भारतीय सुगम संगीत में प्रयुक्त पाश्चात्य वाद्यों का अध्ययन करना।

4. भारतीय सुगम संगीत पर पाश्चात्य वाद्यों के प्रयोग के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिसीमांकन–

शोध कार्य समय सीमा व गहन अध्ययन की दृष्टि से निम्नलिखित बिन्दुओं के अध्ययन तक सीमित रहेगा :–

1. सुगम संगीत की गेय विधाओं में उत्तर भारतीय संगीत में प्रयुक्त ग़ज़ल व भजन गायन–शैलियों तथा उनमें प्रयुक्त भारतीय एवं पाश्चात्य वाद्यों का अध्ययन किया जायेगा।

2. पाश्चात्य संगीत के चारों वर्गों के लगभग 20 वाद्यों का अध्ययन किया जायेगा।

अध्ययन की विधि –

प्रस्तुत शोध कार्य वर्णनात्मक साक्षात्कार, सर्वेक्षणात्मक विधियों द्वारा सम्पन्न किया जायेगा।

अध्ययन के स्रोत–

तथ्यों का संकलन पुस्तकालयों में उपलब्ध पुस्तक व शोध प्रबन्ध के अतिरिक्त पत्र–पत्रिकाएँ, व विद्वानों से प्राप्त साक्षात्कार के माध्यम से किया जायेगा।

अध्ययन के उपकरण –

टेप रिकोर्डर, सी.डी., इन्टरनेट, एम.पी.थ्री., एम.पी. फोर, मोबाईल, रेडियो, टेलीविजन आदि।

अध्ययन की रूपरेखा–

भूमिका

प्रथम अध्याय

भारतीय सुगम संगीत की गेय विधाएँ।

द्वितीय अध्याय

सुगम संगीत की गेय विधाओं में प्रयुक्त भारतीय वाद्य।

तृतीय अध्याय

सुगम संगीत की गेय विधाओं में प्रयुक्त वर्तमान पाश्चात्य वाद्य।

चतुर्थ अध्याय

पाश्चात्य वाद्यों की भारतीय संगीत में उपयोगिता।

पंचम अध्याय

सुगम संगीत पर पाश्चात्य वाद्यों का प्रभाव–

(i) सकारात्मक प्रभाव

(ii) नकारात्मक प्रभाव

उपसंहार

शोध का महत्त्व –

भारतीय सुगम गायन शैलियों के क्षेत्र में अनेक भारतीय परम्परागत वाद्य के साथ प्रयोग में लाये जा रहे हैं। जिनके फलस्वरूप सुगम संगीत की विभिन्न गायन–शैलियों के प्रदर्शन में जहाँ परिवर्तन आया, वहीं सौन्दर्यवृद्धि के साथ ही साथ आकर्षण भी उत्पन्न होता है, किन्तु साथ ही इन वाद्यों का प्रयोग परम्परागत रूप से होता आ रहा है। वाद्यों के रूप में नकारात्मक प्रभाव भी पड़ रहा है। अनेक ऐसे पाश्चात्य वाद्य हैं जिनका प्रयोग तो भारतीय संगीत के क्षेत्र में विगत शताब्दी से किया जा रहा है किन्तु इस क्षेत्र में संगीत जगत् के लोगों के मध्य पूर्ण जानकारी उपलब्ध नहीं है अस्तु शोधकर्त्री द्वारा किये जा रहे इस कार्य के माध्यम से अधिक से अधिक जानकारी उपलब्ध हो पायेगी व शोध की नई दिशायें प्रशस्त हो पायेंगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें

क्र.सं0	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशक व प्रकाशन वर्ष
1	मराठे, मनोहर भाल चन्द्र राव	ताल वाद्य शास्त्र	शर्मा, पुस्तक सदन, सन्
2	वनिता, वेणु	तबला ग्रन्थ मंजुषा	कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स संस्करण—प्रथम, 2004
3	मिश्र, लालमणि	भारतीय संगीत वाद्य	भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण—द्वितीय
4	श्रीवास्तव, हरिशचन्द्र	वाद्यशास्त्र	संगीत सदन, इलाहाबाद, चतुर्थ संस्करण।

पत्रिकायें

क्र.सं.	सम्पादक का नाम	पत्रिका का नाम	प्रकाशक व प्रकाशन वर्ष
1	गर्ग, लक्ष्मी नारायण	संगीत मासिक पत्रिका, 1996	संगीत कार्यालय, हाथरस
2	गर्ग, लक्ष्मी नारायण	संगीत पत्रिका, जून 1984	संगीत कार्यालय, हाथरस।

कोश ग्रन्थ

क्र.सं.	लेखक का नाम	कोश का नाम	प्रकाशक व प्रकाशन वर्ष
1	अग्रवाल, पुरुषोत्तम नारायण	नालन्दा अद्यतन कोश	ला0 फूलचन्द्र जैन
2	बाहरी हरदेव	राजपाल हिन्दी कोश	राजपाल एण्ड सन्स, 2004
3	दीक्षित, कृष्णकान्त	मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश	कमल प्रकाशन
4	श्रीवास्तव गिरीशचन्द्र	ताल कोश	रूबी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1996